राष्ट्रीय किसान सम्मेलन-सह-किसान मेला-2025

11-12 मार्च, 2025

संक्षिप्त रिपोर्ट

बिहार कृषि विश्वविद्यालय, सबौर

www.bausabour.ac.in

बिहार कृषि विश्वविद्यालय, सबौर, भागलपुर

राष्ट्रीय किसान सम्मेलन-सह-किसान मेला-2025 की संक्षिप्त रिपोर्ट

(दिनांकः 11-12 मार्च, 2025)

(प्रगति प्रतिवेदन)

बिहार कृषि विश्वविद्यालय (बि.कृ.वि.), सबौर द्वारा 11-12 मार्च को विश्वविद्यालय परिसर में दो दिवसीय राष्ट्रीय किसान सम्मेलन-सह-किसान मेला-2025 का आयोजन किया गया। किसान मेला-सह-कृषि प्रदर्शनी बिहार कृषि विश्वविद्यालय, सबौर का एक वार्षिक आयोजन है, जिसे विश्वविद्यालय द्वारा विशेष रूप से किसानों के लिए आयोजित किया जाता है ताकि उन्हें कृषि के क्षेत्रों की नवीनतम जानकारी दी जा सके और साथ ही उन्हें वैज्ञानिकों और विशेषज्ञों के साथ अपनी समस्याओं को साझा करने का अवसर भी प्राप्त हो सके।

''कृषि-उद्यमिता के माध्यम से किसान समृद्धि'' विषय पर केंद्रित राष्ट्रीय किसान सम्मेलन-सह-किसान मेला 2025 का उद्‌घाटन 11 मार्च, 2025 को बिहार कृषि विश्वविद्यालय सबौर मुख्यालय में किया गया। जिसमें बिहार के माननीय राज्यपाल श्री आरिफ मोहम्मद खान मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित हुये। इस अवसर पर भागलपुर के सांसद श्री अजय मंडल, गोपालपुर के विधायक श्री नरेंद्र कुमार नीरज, सी-डैक, पटना के निदेशक डॉ. आदित्य कुमार सिन्हा, नाबार्ड, पटना के सीजीएम श्री विनय कुमार सिन्हा और भागलपुर के पोस्ट मास्टर जनरल श्री मनोज कुमार सहित कई विशिष्ट अतिथियों की उपस्थिति उल्लेखनीय रही। किसान मेला के उद्‌घाटन सत्र में पांच डाक टिकटों का अनावरण किया गया, जिनमें से प्रत्येक बिहार के प्रमुख भौगोलिक संकेत (जीआई)

कृषि उत्पादों का प्रतिनिधित्व करतें हैं, जो राज्य की समृद्ध कृषि विविधता को बढ़ावा देने में एक महत्वपूर्ण कदम है। उक्त अवसर पर जिन डाक टिकटों का अनावरण किया गया उसमें पहला मगही पान हैः जो औरंगाबाद, गया, नवादा और नालंदा के मगध क्षेत्रों में उगाए जाने वाले पान की एक प्रसिद्ध किस्म है। दूसरा डाक टिकट कतरनी चावलः एक उत्कृष्ट चावल जो अपने विशिष्ट स्वाद और बनावट के लिए जाना जाता है। तीसरा डाक टिकट जर्दालु आमः यह भागलपुर का एक छोटा, मीठा, पीला आम है। चौथा मिथिला मखानाः मिथिलांचल क्षेत्र से प्राप्त उच्च गुणवत्ता वाला मखाना है और पाँचवा डाक टिकट शाही लीची पर जारी हुआ। ये डाक टिकट बिहार की कृषि विरासत और भारत के विविध कृषि परिदृश्य में अपने अमूल्य योगदान को उजागर करते हैं। इसके अतिरिक्त सी-डैक, पटना के सहयोग से विकसित एग्री सीएएमएस एप्लिकेशन को भी लॉन्च किया गया। उद्घाटन सत्र में स्वागत भाषण बिहार कृषि विश्वविद्यालय, सबौर के कुलपति डॉ. डी. आर. सिंह ने दिया, जिन्होंने मुख्य अतिथि माननीय राज्यपाल श्री आरिफ मोहम्मद खान के प्रति आभार व्यक्त किया। उन्होंने विश्वविद्यालय की प्रभावशाली प्रगति को रेखांकित किया। डा. सिंह ने कहा कि किसान मेला में अभी तक 5,500 किसान पंजीकृत हो चुके हैं और पहले दिन 10,000 से अधिक किसानों के मेले में आने की उम्मीद है। उन्होंने यह भी कहा कि उन्नत कृषि तकनीकों के प्रदर्शन के लिए विभिन्न कंपनियों, कॉलेजों और विभागों द्वारा कुल 150 स्टॉल लगाए गए है। डा. डी. आर. सिंह ने बताया कि किसान मेला अवधि में केंद्रित एक प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता आयोजित की जाएगी जिसमें उत्कृष्ट किसानों को पुरस्कार प्रदान किए जाएंगे। इसके अलावा किसानों को विश्वविद्यालय में विभिन्न वाणिज्यिक इकाइयों का दौरा करने का अवसर भी दिया जाएगा। उन्होंने यह भी कहा कि विश्वविद्यालय का लक्ष्य वर्ष के अंत तक 10-15 जीआई उत्पाद को पंजीकृत कराकर किसानों को लाभान्वित करना है, जो बिहार में कृषि पारिस्थितिकी तंत्र को बढ़ाने के लिए विश्वविद्यालय की प्रतिबद्धता को रेखांकित करेगा। इसके अलावा उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय का यू-ट्यूब चैनल, जो कृषि सामग्री के लिए

भारत में सबसे बड़ा है, उस पर 500 से अधिक तकनीकी वीडियो अपलोड किये गये है। उन्होनें बताया कि अभी तक विश्वविद्यालय द्वारा 97 स्टार्टअप को इनक्यूबेट किया गया है, जिसमें हमारे विश्वविद्यालय के तीन छात्र इस उद्यमशीलता की पहल से लाभान्वित हुए हैं।

अपने संबोधन में, बिहार के माननीय राज्यपाल श्री आरिफ मोहम्मद खान ने कम समय में उल्लेखनीय उपलब्धियों के लिए बिहार कृषि विश्वविद्यालय, सबौर को बधाई दी। उन्होंने विशेष रूप से बिहार में मखाना बोर्ड के गठन की प्रशंसा की और इसे स्थानीय किसानों की सहायता करने में एक महत्वपूर्ण कदम बताया। उन्होंने बिहार कृषि विश्वविद्यालय, सबौर द्वारा विकसित मखाना किस्म (सबौर मखाना-I) के सफलता की भी सराहना की, जो किसानों के खेतों में ठोस बदलाव ला रही है। उन्होंने विश्वविद्यालय के इनक्यूबेशन सेंटर की निरंतर सफलता को भी उल्लेखित किया जो नवाचार और उद्यमिता को बढ़ावा देना जारी रखे हुये है। इसके अतिरिक्त उन्होंने विश्वविद्यालय के कृषि ज्ञान वाहन और राज्य भर के किसानों के जीवन को बेहतर बनाने के लिए विश्वविद्यालय द्वारा विकसित की गई अन्य सुविधाओं की भी सराहना की। उद्घाटन स़त्र के समापन में बिहार कृषि विश्वविद्यालय, सबौर के बीज और फार्म निदेशक डा. एम. फिजा अहमद द्वारा धन्यवाद ज्ञापित किया गया। उद्घाटन स़त्र के दौरान विश्वविद्यालय के कई प्रकाशनों का विमोचन आदरणीय राज्यपाल महोदय द्वारा किया गया, जिसमें कृषि अनुसंधान और ज्ञान कें प्रसार में विश्वविद्यालय के योगदान पर जोर दिया गया। उद्घाटन समारोह में विश्वविद्यालय के सभी अधिष्ठाता, निदेशक, संकाय सदस्य और कर्मचारी शामिल हुए, जिनमें निदेशक प्रसार शिक्षा डॉ. आर. के. सोहाने, सह निदेशक प्रसार शिक्षा, डा. आर. एन. सिंह, उप निदेशक प्रशिक्षण डा. अभय मानकर भी शामिल थे। डॉ. आर. के. सोहाने ने इस महत्वपूर्ण आयोजन की सफलता के लिये सभी लोगों का आभार व्यक्त किया।

उद्घाटन सत्र के बाद प्रथम तकनीकी सत्र में कृषि ज्ञान प्रतियोगिता, किसान - वैज्ञानिक संवाद के साथ जलवायु अनुकूल कृषि तकनीकों पर विशेष कार्यशाला का आयोजन किया गया। विश्वविद्यालय/महाविद्यालयों के छात्र/छात्राओं एवं शिक्षकों द्वारा सांस्कृतिक संध्या बैठक में अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन किया और किसानों/अतिथियों को लोक शिक्षण की विद्या से परिचय कराया।

किसान मेला के अवसर पर मुख्य रूप से उद्यान प्रदर्शनी आकर्षण का केन्द्र रहा। उद्यान प्रदर्शनी का आयोजन उद्यान (फल) एवं उद्यान (सब्जी) बिहार कृषि महाविद्यालय, सबौर द्वारा संयुक्त रूप से किया गया। उद्यान प्रदर्शनी का विधिवत उद्घाटन माननीय राज्यपाल, बिहार के कर-कमलों द्वारा किया गया। इस प्रदर्शनी में सब्जी, फल, पुष्प एवं प्रसंस्कृत उत्पाद सहित विभिन्न वर्गो एवं शाखाओं में 1100 से ज्यादा प्रादर्श की प्रदर्शनी लगायी गयी। इसमें सब्जियों के विभिन्न शाखा में 425 से ज्यादा, पुष्प एवं सगंधीय औषधीय पौधों के विभिन्न शाखाओं में 385 प्रादर्श, फल के विभिन्न शाखाओं में 141 प्रादर्श तथा फल-सब्जियों के प्रसंस्कृत पदार्थो में 84 से अधिक प्रादर्श सम्मिलित किये गये। इन सभी वर्गो के उत्कृष्ट उत्पाद को पुरस्कृत किया गया तथा किसानों को सम्मानित किया गया। सब्जियों में मुख्य आकर्षण का केन्द्र पीले, बैंगनी, हरे एवं सफेद रंग के फूलगोभी थे।

बिहार कृषि विश्वविद्यालय, सबौर

बिहार कृषि विश्वविद्यालय, सबौर

बिहार कृषि विश्वविद्यालय, सबौर

बिहार कृषि विश्वविद्यालय, सबौर
राष्ट्रीय किसान सम्मेलन-सह-

दूसरा दिन (12 मार्च, 2025)

किसानों की आर्थिक स्थिति को मजबूत करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम के रूप में बिहार कृषि विश्वविद्यालय, सबौर द्वारा किसान- मेला 2025 के दूसरे दिन (12.03.2025) "प्रसंस्कृत खाद्य उत्पादों के निर्यात के माध्यम से किसानों की समृद्धि" पर एक विशेष तकनीकी सत्र आयोजित किया गया। यह सत्र कृषि और प्रसंस्कृत खाद्य उत्पाद निर्यात विकास प्राधिकरण (APEDA), वाराणसी के सहयोग से आयोजित किया गया और इसमें बिहार सहित पड़ोसी राज्यों के किसानों की भागीदारी हुयी। इस तकनीकी सत्र में एपीडा के विशेषज्ञ और बिहार कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों द्वारा मूल्य श्रृंखला, मांग-संचालित उत्पादन, गुणवत्ता मानक, प्रमाणन, लाइसेंसिंग, प्रसंस्करण, पैकेजिंग और लेबलिंग आदि महत्वपूर्ण बिन्दुओं सहित कृषि उत्पाद निर्यात के महत्वपूर्ण पहलुओं पर चर्चा की गयी। इस सत्र के वक्ताओं ने प्रसंस्कृत खाद्य उत्पादों के निर्यात के बारे में बहुमूल्य जानकारी प्रदान की। एपीडा वाराणसी के तकनीकी अधिकारी श्री आनंद प्रकाश ने खाद्य निर्यात को सुविधाजनक बनाने में एपीडा की भूमिका को विस्तार से बताया। डॉ. अविनाश कुमार, सहायक प्राध्यापक, कृषि अर्थशास्त्र विभाग, बिहार कृषि महाविद्यालय, सबौर ने ''खाद्य निर्यात में मूल्य श्रृंखला का महत्व'' विषय पर एक विस्तृत व्याख्यान दिया गया। डा. अविनाश नें बताया कि कैसे मूल्य संवर्धन किसानों के मुनाफे को अधिकतम कर सकता है और वैश्विक बाजारों में उनकी प्रतिस्पर्धात्मकता को बढ़ा सकता है। डॉ. अनित कुमार, सहायक प्राध्यापक, खाद्य विज्ञान विभाग, बि.कृ.महा., सबौर एवं ई. कुमार संदीप, सहायक प्राध्यापक, खाद्य विज्ञान विभाग, बि.कृ.महा., सबौर ने ''खाद्य उत्पादों के निर्यात के लिए गुणवत्ता रखरखाव और प्रमाणन'' पर जोर दिया गया। विद्वान वक्ताओं ने बताया कि गुणवत्ता आश्वासन और प्रमाणन अंतर्राष्ट्रीय स्वीकृति प्राप्त करने

के लिए महत्वपूर्ण हैं। उन्होंने कहा कि इनके बिना भारतीय खाद्य उत्पादों के लिए वैश्विक बाजारों में सफल होना चुनौतीपूर्ण होगा। श्रीमती कंचन कुमारी, सहायक प्राध्यापक, खाद्य विज्ञान विभाग, बि.कृ.महा., सबौर ने ''खाद्य निर्यात में पैकेजिंग और लेबलिंग के महत्व'' पर अपना विचार साझा किया, जिसमें उन्होंने इस बात पर जोर दिया गया कि आकर्षक पैकेजिंग और उचित लेबलिंग उत्पाद की अपील और निर्यात सफलता को महत्वपूर्ण रूप से बढ़ाती है। बिहार कृषि विश्वविद्यालय, सबौर द्वारा आयोजित राष्ट्रीय किसान सम्मेलन-सह-किसान मेला की दो दिनों की अवधि व्यापक रूप से ज्ञान-साझाकरण, तकनीकी प्रदर्शन और किसान-उन्मुख चर्चाओं का मंच बना। इसमें सरकारी और निजी दोनों संगठनों द्वारा लगाए गए लगभग 150 स्टॉल शामिल थे, जिनमें कृषि प्रौद्योगिकी, उन्नत बीज किस्मों, जैविक खेती के समाधान, आधुनिक सिंचाई तकनीक और कृषि मशीनीकरण उपकरणों में नवीनतम प्रगति का प्रदर्शन किया गया। इस आयोजन का प्राथमिक उद्देश्य वैज्ञानिक अनुसंधान और व्यावहारिक कृषि अनुप्रयोगों के बीच की खाई को पाटना था, ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि किसानों को नवीन कृषि विधियों का प्रत्यक्ष अनुभव प्राप्त हो रहा है।

मेले का एक महत्वपूर्ण आकर्षण तकनीकी कार्यशालाओं और प्रशिक्षण सत्रों की श्रृंखला थी, जहाँ एपीडा, वाराणसी और अन्य कृषि संस्थानों के विशेषज्ञों ने खेती से संबंधित प्रमुख विषयों पर किसानों को संबोधित किया। इसके अलावा, डॉ. आर. के. जाट ने कृषि पर जलवायु परिवर्तन के प्रभावों के बारे में विस्तार से बताया और किसानों को जलवायु अनुकूल कृषि तकनीकों को अपनाने की आवश्यकता पर बल दिया।

मौसम में हो रहे तीव्र परिवर्तन के आलोक में मृदा स्वास्थ्य प्रबंधन, जैविक खेती के तरीके, एकीकृत कीट नियंत्रण और कुशल जल संरक्षण तकनीकों जैसे महत्वपूर्ण पहलुओं को भी तकनीकी सत्रों में शामिल किया गया, जिनका उद्देश्य किसानों को टिकाऊ और उच्च उपज वाली खेती हासिल करने में मदद करना है। वैज्ञानिक

पैनल चर्चा इस आयोजन की एक अन्य प्रमुख विशेषता थी, जहां कृषि वैज्ञानिकों, नीति निर्माताओं और उद्योग विशेषज्ञों ने भारतीय कृषि में वर्तमान चुनौतियों और भविष्य के अवसरों पर अपने दृष्टिकोण साझा किए। वैज्ञानिक दल ने सटीक खेती, कृषि वानिकी, फसलों के विविधीकरण और एआई-आधारित निगरानी प्रणाली ड्रिप सिंचाई जैसे स्मार्ट खेती के उपकरणों को अपनाने के महत्व पर जोर दिया। पैनल ने किसानों के लिए सरकारी योजनाओं और वित्तीय सहायता की भूमिका पर भी चर्चा की, यह सुनिश्चित करते हुए कि उन्हें अपनी खेती के तरीकों में सुधार के लिए उपलब्ध संसाधनों के बारे में अच्छी जानकारी है। तकनीकी सत्र में कृषक समुदाय से जबरदस्त प्रतिक्रिया मिली, जिसमें कई लोगों ने प्रसंस्कृत खाद्य प्रौद्योगिकियों को अपनाने और अंतर्राष्ट्रीय बाजारों की खोज करने में गहरी रुचि दिखाई। इस कार्यक्रम ने खाद्य प्रसंस्करण और निर्यात को बढ़ावा देने में किसानों, उद्योग विशेषज्ञों और सरकारी एजेंसियों के बीच सहयोग की महत्वपूर्ण भूमिका को रेखांकित किया। इस तरह के प्रयास न केवल किसानों की आय बढ़ाते हैं बल्कि वैश्विक कृषि अर्थव्यवस्था में भी महत्वपूर्ण योगदान देते हैं।

कृषि में उत्कृष्ट योगदान देने वाले किसानों को सम्मानित करने और मान्यता देने के लिए एक मंच के रूप में भी यह किसान मेला उल्लेखनीय रहा। किसान सम्मेलन-सह-किसान मेला के दोनों दिन कई प्रगतिशील किसानों को सम्मानित किया गया जिन्होंने अपने खेतों में अभिनव तकनीकों को सफलतापूर्वक लागू किया है।

इस मेले में आधुनिक कृषि नवाचारों को प्रदर्शित करने वाले कई प्रकार के स्टॉल भी लगाए गए। किसानों को अत्याधुनिक कृषि उपकरण, उच्च उपज वाले बीज की किस्में, जैविक खाद, पर्यावरण के अनुकूल कीटनाशक, सौर ऊर्जा से चलने वाले सिंचाई पंप, ड्रिप सिंचाई प्रणाली, ग्रीनहाउस खेती के समाधान और कटाई के बाद की उन्नत प्रबंधन तकनीकों का पता लगाने का अवसर मिला। इन प्रदर्शनों ने किसानों को व्यावहारिक उपकरणों

का व्यावहारिक प्रदर्शन प्रदान किया जो उत्पादकता और लाभप्रदता बढ़ा सकते हैं। इन स्टॉलों पर विशेषज्ञों ने उन्नत कृषि तकनीकों के उचित उपयोग पर किसानों का मार्गदर्शन करते हुए लाइव प्रदर्शन भी किए।

इस कार्यक्रम को और अधिक आकर्षक बनाने के लिए, सांस्कृतिक प्रदर्शन और लोक संगीत को कार्यक्रम में शामिल किया गया। पारंपरिक लोकगीत, कृषि-थीम वाले संगीत प्रदर्शन और संवादात्मक कहानी सुनाने के सत्र आयोजित किए गए, जिनमें समृद्ध कृषि विरासत और आधुनिक कृषि तकनीकों के महत्व पर प्रकाश डाला गया। किसानों ने इन प्रदर्शनों का भरपूर आनंद लिया, जिन्होंने न केवल मनोरंजन प्रदान किया, बल्कि टिकाऊ कृषि और ग्रामीण विकास के बारे में महत्वपूर्ण संदेश भी दिए।

मेले का समापन औपचारिक समापन समारोह के साथ हुआ, जहां बिहार कृषि विश्वविद्यालय, सबौर के निदेशक प्रसार शिक्षा डॉ. आर. के. सोहाने ने सभी प्रतिभागियों, प्रदर्शकों और हितधारकों के प्रति आभार व्यक्त किया। उन्होंने किसानों, शोधकर्ताओं और कृषि उद्यमियों की उत्साही भागीदारी की सराहना की और इस बात पर जोर दिया कि विश्वविद्यालय किसानों को वैज्ञानिक और तकनीकी प्रगति से सशक्त बनाने के लिए इस तरह के ज्ञान-साझाकरण कार्यक्रम आयोजित करना जारी रखेगा। उन्होंने आने वाले वर्षों में मेले का विस्तार करने की योजना की भी घोषणा की, जिसमें अधिक संख्या में किसानों को लाभान्वित करने के लिए अधिक इंटरैक्टिव सत्र, प्रौद्योगिकी प्रदर्शन और नीति चर्चाएं शामिल की जाएंगी। कुल मिलाकर, राष्ट्रीय किसान सम्मेलन और किसान मेले ने किसानों को आधुनिक कृषि समाधानों, वैज्ञानिक विशेषज्ञता और नवीन कृषि प्रथाओं से जोड़ने

के अपने लक्ष्य को सफलतापूर्वक प्राप्त किया। ज्ञान के आदान-प्रदान, व्यावहारिक प्रशिक्षण और विशेषज्ञों के साथ सीधी बातचीत के लिए एक मंच प्रदान करके, इस आयोजन ने किसानों की जागरूकता और क्षमताओं

को बढ़ाने, उन्हें उत्पादकता बढ़ाने, खेती के जोखिमों को कम करने और कृषि में दीर्घकालिक स्थिरता सुनिश्चित करने के लिए आवश्यक उपकरणों और तकनीकों से लैस करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। मेले के समापन अवसर पर किसानों की भारी भागीदारी रही। मेले में बिहार के किसानों के अलावा पड़ोसी राज्यों उत्तर प्रदेश, झारखंड और बिहार से लगभग पच्चीस हजार किसान और कृषि प्रेमी शामिल हुए।

इस अवसर पर बिहार सरकार कृषि विभाग के सहयोग से संचालित जलवायु अनुकूल कृषि कार्यक्रम के उत्कृष्ट किसानों तथा राज्य के अन्य विशिष्ट किसानों को नवोन्मेषी किसान/विशिष्ट किसान सम्मान से सम्मानित किया गया।

क्रम सं.	**जिला**	**नवोन्मेषी किसान पुरस्कार**	**विशिष्ट किसान सम्मान**
1.	अररिया	श्री प्रिंस कुमार	श्री दिलीप मेहता
2.	अरवल	श्री कुमार धर्मेन्द्र	श्री नारायण शर्मा
3.	औरंगाबाद	श्री रामाधार मेहता	श्री विनोद कुमार सिंह
4.	बांका	श्री पवन कुमार	श्री सुजीत राव
5.	भागलपुर	श्रीमती संगीता देवी	श्री विनय शंकर भारती
6.	भोजपुर	श्री उपेन्द्र नाथ सिंह	श्री सुनील राय
7.	मानपुर, गया	श्रीमती सरोज देवी	श्री संजय कुमार सिंह

क्रम सं.	जिला	नवोन्मेषी किसान पुरस्कार	विशिष्ट किसान सम्मान
8.	आमस, गया	श्री नीति रंजन प्रताप	-
9.	जहानाबाद	श्री गणेश प्रसाद	श्री धनेश कुमार
10.	कटिहार	श्री अजय कुमार चौहान	श्री प्रदीप कुमार चौरसिया
11.	खगड़िया	श्रीमती. सरिता कुमारी	श्री चंदन महतो
12.	किशनगंज	श्री रवि आनंद	मो. नुवेद
13.	लखीसराय	श्री राजेंद्र प्रसाद महतो	श्री रवीन्द्र सिंह
14.	मधेपुरा	श्रीमती. पुनम कुमारी	श्री बिनोद कुमार साह
15.	मुंगेर	श्री जीतेन्द्र कुमार राय	-
16.	नालंदा	श्री बीरेश कुमार	श्री प्रवीण कुमार सिंह
17.	पटना	सुश्री कुमारी संगीता	श्री सुजीत कुमार
18.	पूर्णिया	श्री कार्तिक किशोर	श्री भोला दीवान
19.	रोहतास	श्री विजय कुमार सिंह	श्री रजनीकृांत सिंह
20.	सहरसा	श्री साकेत रंजन	श्री अरबिन्द सिंह
21.	शेखपुरा	श्री नीरज कुमार	श्री अजय प्रसाद कुशवाहा
22.	सुपौल	श्री राजेंद्र कुमार यादव	श्री पंकज कुमार मेहता
23.	कैमूर	श्री अशोक कुमार सिंह	श्री सुरेंद्र दुबे
24.	नवादा	श्री प्रवीण कुमार मिश्र	-
25.	मुजफ्फरपुर	श्री सोनू निगम कुमार	-
26.	जमुई	-	श्री पंकज कुमार

किसान मेला समारोह के दौरान विश्वविद्यालय द्वारा डॉ. जी. त्रिवेदी बेस्ट एक्सटेशन प्रोफेशनल अवार्ड और बेस्ट एक्सटेशन साइंटिस्ट अवार्ड भी प्रदान किया गया-

डॉ. जी. त्रिवेदी बेस्ट एक्सटेशन प्रोफेशनल अवार्ड :

1. डॉ. रीता सिंह, वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रमुख, कृषि विज्ञान केन्द्र, बाढ़ (पटना)
2. डॉ. आदित्य सिन्हा, सहायक प्रोफेसर, प्रसार शिक्षा, बिहार कृषि महाविद्यालय, सबौर

बेस्ट एक्सटेशन साइंटिस्ट अवार्ड :

1. डॉ. एम. जियाउल होदा, विषय वस्तु विशेषज्ञ (पशु विज्ञान), कृषि विज्ञान केन्द्र, भागलपुर
2. डॉ. पंकज कुमार, विषय वस्तु विशेषज्ञ (उद्यान), कृषि विज्ञान केन्द्र, सहरसा

राष्ट्रीय किसान सम्मेलन-सह-किसान मेला 2025 में बिहार के सभी 38 जिलों और झारखंड के छह जिलों से 25,000 से अधिक किसानों ने भाग लिया, जिसकी संक्षिप्त विवरणी निम्नलिखित तालिका में प्रस्तुत है-

क्र.सं.	हितधारक का नाम	प्रतिभागियों
1.	आत्मा (38 जिले) प्रसार पदाधिकारी और किसान	2700
2.	कृषि विज्ञान केन्द्र (25)	9800
3.	अंतरराज्यीय (झारखंड)	450
4.	एनजीओ	650
5.	एसएचजी/सीआईजी/एफआईजी/किसान क्लब/एफपीओ	2150
6.	भागलपुर और आस-पास के जिले के किसान	9000

भारतवासी के थाल में बिहार का एक व्यंजन
मेला
GI-Tag

बिहार कृषि विश्वविद्यालय सबौर

NEPAL